

केस प्रस्तुति के उत्तर

1. अर्चना ने 17 अक्टूबर को सुबह 8 बजकर 30 मि. 45 से. पर एक लड़की को जन्म दिया। अर्चना का गर्भकाल 9 माह 7 दिन रहा। बच्ची ठीक से रो रही थी और साँस ले रही थी। उसका वजन 2 कि. 800 ग्रा. था। उसके हाथ पैर लुंज पुंज नहीं थे। आशा ने प्रसव के तुरंत बाद, उसे माँ के स्तनों से लगाया और उसने ठीक से स्तनपान भी किया।

सोलहवें दिन आशा को घर बुलाया गया। माँ ने बताया कि लड़की का शरीर ठंडा पड़ रहा है। आशा ने उसके शरीर का तापमान लिया और उसे 93.5°फॅ. (34.2°सें.) पाया। जाँच करने पर पाया कि उसकी छाती अंदर को नहीं धँसी थी। उसका रोना कमजोर था। कल, 15 वें दिन के दौरे में लड़की का वजन 3 कि.ग्रा. पाया गया। आशा ने निदान किया कि लड़की को सेप्सिस (जन्तुदोष) है।

अब आप क्या करेंगी ? माता-पिता को बच्ची की हालत और घर पर इलाज कराने के खतरों के बारे में पहले से बता दें। यदि वे बच्ची को अस्पताल नहीं ले जाना चाहते और घर पर रखकर इलाज करवाना चाहें, तो उनसे पूर्व स्वीकृति वाले फॉर्म पर हस्ताक्षर करवाएँ।

अब यह फॉर्म भरें। निदान की तारीख है 1 नवम्बर (प्रसव की तारीख के 15 दिन बाद)

पूर्व स्वीकृति फॉर्म पर माता-पिता से हस्ताक्षर करवाने के बाद आप लड़की की जाँच करें और इलाज करना शुरू करें।

वह कम स्तनपान कर रही हैं।

बहुत धीमे रो रही हैं।

माँ कहती है कि शिशु का शरीर ठंडा है और मापने पर तापमान 93.5°फॅ. (34.2°सें.) है।

उसका पेट मुलायम है और उसे उल्टी नहीं हो रही।

छाती अंदर को धँसी नहीं है।

उसकी नाल पकी नहीं है।

आप उसे कितनी दवाएँ देंगी ?

जेन्टामाइसिन 15 मि.ग्रा. सुई दिन में 1 बार;

कोट्रिमाॅक्सेजोल 1/4 चम्मच दिन में 2 बार, 7 दिन तक

सेप्सिस उपचार वाला फॉर्म भरें (उचित खाने में ✓ या × का निशान लगाएँ)

उपचार का पहला दिन वाले दौरे का पहला खाना भरें

स्तनपान कम

✓

रोना बहुत धीमे

✓

माँ कहती है कि शिशु का शरीर ठंडा है और

मापने पर तापमान 93.5°फॅ. (34.2°सें.) है।

✓

पेट मुलायम है और उसे उल्टी नहीं हो रही।

×

छाती अंदर को नहीं धँसी

×

नाल पकी हुई नहीं

×

घर से जाते समय माता-पिता को बताएँ कि लड़की की घरेलू देखभाल कैसे करनी है। आप दोबारा जाने पर इन सबकी जाँच करेंगी (उसे ठीक से ओढ़ाना, 2-2 घंटे पर स्तनपान कराना, आदि) और सेप्सिस (जन्तुदोष) के उपचार वाले फॉर्म में भरेगी।

लड़की को कब अस्पताल भेजें इस बारे में अंतिम प्रश्न नोट करें। इस पर निशान तभी लगाना है यदि शिशु को इनमें से कुछ लक्षण हों और तभी अस्पताल भेजना है।

आप लड़की को देखने के लिए 7 दिन तक दिन में 2 बार जाएँगी।

उपचार के पाँचवे दिन शाम को आपने दवा दी और पाया:

- लड़की ठीक से स्तनपान कर रही है,
- ठीक से रो रही है
- उसके शरीर का तापमान 98.0°फॅ. (36.7°सें.) है।
- पेट फूला हुआ नहीं है और उल्टी नहीं हो रही।
- छाती अंदर धँसी नहीं है
- नाल पकी नहीं हैं।
- दाईं जाँघ में जेन्टामाइसिन की सुई लगाई गई, बाईं जाँघ, जहाँ पिछली बार सुई लगी थी, बिल्कुल ठीक है।
- शिशु ठीक से टोपी, कपड़े पहने हुये है और उसे ओढ़ाया गया है।
- उसे माँ के पास लिटाया गया है
- माँ उसे 2-2 घंटे पर स्तनपान करा रही है।
- माँ के नाखून छोटे हैं और उसने बताया कि वह बच्ची को छूने से पहले अपने हाथ धोती है।
- बच्ची को किसी अन्य बीमारी की दवा नहीं दी जा रही और उसकी हालत में सुधार हो रहा है।
- उसमें खतरे वाले ऐसे कोई लक्षण नहीं है कि उसे अस्पताल भेजा जाए।

सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म भरें। पाँचवे दिन का शाम के दौरे का खाना भरें।

स्तनपान 'अच्छी तरह'	×
रोना — ठीक	×
तापमान — 98.0°फॅ. (36.7°सें.)	×
पेट — फूला हुआ नहीं, उल्टी नहीं	×
छाती अंदर धँसी नहीं	×
नाल — पकी हुई नहीं	×
जेन्टामाइसिन सुई नहीं लगायी गई (सुबह लगाई गई)	
कोट्रिमाक्सोजॉल — $\frac{1}{4}$ चम्मच पिलाई	
पिछली बार की सुई — (दायाँ पैर) ठीक है	
शिशु ठीक से ढका है	— हाँ
टोपी, फ्रॉक पहने है	— हाँ
नहलाया गया	— नहीं
माँ के पास रखा है।	— हाँ
स्तनपान 2-2 घंटे पर	— हाँ
माँ के नाखून छोटे और साबुन से हाथ धोती है	— हाँ
अन्य सेप्सिस का उपचार	— आवश्यकता नहीं है।